Artistic Narration, Vol. IX, 2018, No. 1: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247 Impact Factor 6.5133(SIJF)

UGC Approved Journal No. 43285

छत्तीसगढ़ : ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा कथक नृत्य

यास्मीन सिंह

कथक नृत्यांगना–रायगढ़ घराना, पीएच.डी. स्कॉलर

Reference to this paper should be made as follows:

यास्मीन सिंह,

छत्तीसगढ़ : ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा कथक नृत्य,

Artistic Narration 2018, Vol. IX, No.1, pp. 9-15

http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

भारतीय संगीत तथा नृत्य के इतिहास को परिभाषित करने जाए तो हम देख सकते हैं कि वैदिक काल के बाद जब ऐतिहासिक काल आया तो अनेकों सम्राट और राजाओं ने भारत की इस संस्कृति को अपना संरक्षण प्रदान किया। जिस कारण भारतीय संगीत तथा नृत्य मंदिरों से निकलकर दरबारों में अपने अस्तित्व को स्थापित किया तथा अनेकों नवीन स्रोत के साथ संस्कृति को और ज्यादा मात्रा में सुदृढ़ किया। संगीत तथा नृत्य के क्षेत्र में राजा चक्रधर सिंह जी का योगदान स्वर्णिम अक्षरों से लिखा हुआ है। नवाब वाजिद–अली–शाह, बादशाह अकबर तथा अनेकों राजाओं की तरह रायगढ़ के नरेश चक्रधर सिंह जी ललित कलाओं के पृष्ठपोषण में अग्रणी भूमिका निभाएं हैं। वह संगीत, नृत्य तथा सभी ललित कलाओं में पारंगत थे एवं अपने दरबार में इन कलाओं को जीवित रूप प्रदान किया। वह एक संगीत प्रेमी के साथ–साथ विलक्षण संगीतज्ञ भी थे। इन सभी तथ्यों पर प्रकाश डालने हेतु छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं सांगीतिक धरोहर को विस्तृत रूप से विश्लेषण करना आवश्यक है। छत्तीसगढ़ राज्य के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथा कथक नृत्य का स्वरूप संक्षिप्त रूप से निम्न रूप है। इस शोध लेख से छत्तीसगढ़ एवं कथक नृत्य का संबंध सुस्पष्ट रूप प्राप्त कर सकता है।

मुख्य शब्द– *लय, गति, छन्द, कला, सार श्रृंगार, बन्दिशों, ताल*

यास्मीन सिंह

सांस्कृतिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ को एक लघु भारत कहा जाता है। इस प्रदेश की सीमाएं उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश और मध्यप्रदेश की सीमाओं से मिलती हैं। झारखण्ड, बस्तर तथा छत्तीसगढ़ की सीमा–रेखाओं को मिटाकर बने छत्तीसगढ़ को 1905 ई. से ही एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत उपलब्ध हुई है। रायगढ़ के निकट कबरा पहाड़ों की गुफाओं और सरगुजा के निकट रामगढ़ से मिले शैलचित्र यहाँ की धरोहर है। महानदी, शिवनाथ, अरपा, खारून, पैरी, माँड, इन्द्रावती, शबरी और गोदावरी जैसी नदी इस भू–भाग की जीवन रेखाएँ है। इन नदियों के तटों पर स्थित तीर्थ और यहाँ आयोजित होने वाले मेले, यात्राएं इस प्रदेश की सांस्कृतिक सम्पन्नता का उद्‌बोधन करते हैं।

इस धरती ने महान संतों, कलाकारों, कवियों को जन्म दिया। यह व्यापक अर्थ में छत्तीसगढ़ हिन्दी भाषी राज्य है और प्रायः छत्तीसगढ़ी के रूप में व्यवहृत हिन्दी इस प्रदेश की जनता की शिक्षा, पत्र व्यवहार और पठन–पाठन की भाषा है जो देवनागरी लिपि से लिखित और मुद्रित की जाती है।

यहाँ के दक्षिण भाग में पतित पावनी गोदावरी के साथ इन्द्रावती, शबरी, चिन्तावागु, तालपेरु, नारंगी, भँवरडिग, कोतरी तथा निबरा आदि सहायिकाएँ अपने उर्मिल प्रवाह से दण्डकारण्य की पर्वत मालाओं और अबुझमाड़ को विदीर्ण करती हुई घाटियों में बलखाती हुई समुद्र से मिलने के लिए बहती चली आ रही है। जहाँ पर तामड़ा, हाथीदरहा, चित्रधारा, महादेव घूमर, बोग्तुम, सतधारा, हाँदावाड़ा, मलोर, इन्दुल, पुलपाड़, तीरथगढ़, काँगेर धारा, खुरसेल, रानीदरहा तथा चित्रकोट जैसे जलप्रपात लाखों यात्रियों का चित्तरंजन करते हैं।

01 नवम्बर सन् 2000 में मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई। यह राज्य 1,35,194 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यहाँ की जनसंख्या लगभग तीन करोड़ है। यहाँ के अधिसंख्यक आदिवासी गोंडू थे। दसवीं सदी में छत्तीसगढ़ गोडों के आधिपत्य से निकल कर रतनपुर के हैह्यवंशी राजपूतों के हाथों में चला गया। पाण्डुवंशी नृपति तीवर देव के 7वीं शताब्दी के एक अभिलेख में 'गोण्डकभुक्ति' का नाम मिलता है।

दक्षिण कौसल "छत्तीसगढ़" की राजधानी श्रीपुर (सिरपुर) एक जमाने में संस्कृत के विद्वानों का केन्द्र था। यहाँ कविराज ईशान, कविकुल गुरू भास्कर भट्‌ट और श्रीकृष्ण दण्डी के नाम उल्लेखित हैं। गंगाधर मिश्र का कौशलानंद काव्य, रतनपुर के तेजनाथ शास्त्री का "रामायण सार संग्रह", रेवाराम बाबू के गीत माधव, गंगालहरी, नर्मदा लहरी आदि ग्रन्थ यहाँ लिखे गए हैं।

छत्तीसगढ़ के इतिहास और उसके सभी पहलूओं तथा क्षेत्रों पर सिलसिलेवार, वैज्ञानिक और विस्तृत दृष्टिकोण से पृथक शोधों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इतिहास लेखन की आधुनिक पद्धति जनता के इतिहास अन्वेशण की है। राज्य में अभी तो सत्ताओं का इतिहास ही पूर्ण स्पश्ट नहीं है। जातियों और प्रवासियों का इतिहास भी नए आयाम खोलेगा।

छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर सम्भाग के बलौदाबाजार जिले और तहसील के ग्राम तुरतुरिया में ऋषि वाल्मीकि का आश्रम और भगवान राम के पुत्रों लव और कुष का जन्म स्थल माना जाता है। उन्होंने पिथौरा के समीप अश्वमेध यज्ञ को पकड़ा था और इसी आश्रम में लाए थे।

कनिष्ठ पुत्र कुश के नाम से छत्तीसगढ़ के प्राचीन नाम कोसल की व्युत्पत्ति मानी गई है।

एक आख्यान भगवान कृष्ण से सम्बन्धित है। यह कथा छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर सम्भाग के रायपुर जिले आरंग से सम्बन्धित है। यह कहा जाता है कि एक बार हैह्यों ने अपने पुत्र को आरी से काटने को कहा। यह कार्य यहीं सम्पन्न हुआ। इस कारण से इस क्षेत्र में आरे का प्रयोग बन्द कर दिया और वह वर्जित हो गया।

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा सम्भाग के सरगुजा जिले के मैनपाट में ग्राम सरभंजा में अगस्त्य मुनि का आश्रम माना गया है।

छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग अर्थात् दण्डकारण्य क्षेत्र में दण्डकारण्य नामकरण का प्रसंग यह बताया जाता है कि इक्ष्वाकु इस क्षेत्र के राजा थे। उनके तृतीय पुत्र दण्ड थे। इक्ष्वाकु के गुरू शुक्राचार्य थे। शुक्राचार्य दण्डकारण्य में रहते थे।

छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर सम्भाग का अमरकंटक पर्वत क्षेत्र भी ऋषियों की तभोभूमि रहा है। यह माना जाता है अमरकंठेश्वर महादेव का स्वयंभू लिंग यहाँ है और रावण ने यहीं उसका तप किया था।

प्राचीन काल

छत्तीसगढ़ से सम्बन्धित प्राचीन आख्यानों पर चर्चा करने के उपरांत इतिहास के वास्तविक धरातल पर चर्चा करने के लिए ज्ञात और अनुमानित, इतिहास क्षेत्र के निर्धारित काल विभाजनों के आधार पर ही चर्चा की जानी होगी।

पाषाण काल

पूर्व पाषाण काल के पत्थर उपकरण छत्तीसगढ़ राज्य की महानदी घाटी और बिलासपुर सम्भाग के रायगढ़ जिले के सिंघनपुर से मिले हैं। महानदी घाटी पूरे छत्तीसगढ़ में विस्तृत है।

मध्य पाषाण काल की साम्रग्री भी बिलासपुर सम्भाग के रायगढ़ जिले के काबरा पहाड़ क्षेत्र से मिली है।

उत्तर पाषाण काल के उपकरण महानदी घाटी, धनपुर (बिलासपुर), सिंघनपुर (रायगढ़) आदि स्थानों पर मिले हैं।

प्रागैतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल का मानव पर्वतीय कन्दराओं में स्थाई निवास करने लगा था। इस काल में भी कन्दरा चित्र बने।

वैदिक काल

भारत में आर्यों के आगमन से वैदिक काल का प्रारम्भ माना जाता है। इस काल के पुरा संकेत भी छत्तीसगढ़ राज्य में मिलते हैं। पौराणिक आख्यानों और महाकाव्यों से जोड़ कर स्थानों को इंगित करना भी इस ओर संकेत करता है।

छत्तीसगढ़ का क्षेत्र मौर्य शासन अर्थात् चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके पुत्रों के अधीन रहा था।

आधुनिक काल

छत्तीसगढ़ राज्य के आधुनिक काल के इतिहास का प्रारम्भ स्पश्ट रूप से 1742 ई. मराठा भोंसले आक्रमण और उनके आधिपत्य से होता है।

इस काल तक स्पष्टतः तीन प्रकार की भूमियाँ स्थापित हो चुकी थीं। यह थीं–

1. खालसा, 2. रियासत और 3. जमींदारियाँ।

ब्रिटिश नियंत्रण (1853–1947)

1854 से 1857 तक कैप्टन एलेक्जेंडर इलियट छत्तीसगढ़ के डिप्टी कमिश्नर के प्रभाव में रहा। अब बस्तर भी छत्तीसगढ़ में मिला दिया गया। इस क्षेत्र का नाम छत्तीसगढ़ जिला दिया गया।

क्षेत्र का इतिहास उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति पर प्रभाव डालता है। यह जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान, जिजीविशा, कला, हस्तशिल्प आदि को भी प्रभावित करता है। जब भी किसी काल को स्वर्ण युग कहा गया है, तब–तब कलाओं और विशेष कर हस्तशिल्प की कलाओं का भी विशेष योगदान होता है। कलाओं की स्वर्णिम स्थिति हेतु शांति का काल और मजबूत तथा सम्पन्न अर्थव्यवस्था अनिवार्य तत्व होते हैं। उच्च स्थापना कला तो इनके बिना सम्भव भी नहीं है।

छत्तीसगढ़ निवासी संगीतप्रिय हैं। लय, गति, छन्द, संगीत और नृत्य आन्तरिक भाव को जन्म दिया है। यहाँ मुण्डा–समूह, द्रविड़–समूह तथा आर्य–समूह की बोलियों में लोक–गायन की सुदीर्घ परम्परा है। यह प्रमुख रूप से यहाँ के लोकगाथा गीतों में देखने को मिलती है। मुण्डा–समूह में सिड़बोंगा की गाथा कुडुख में रोहतासगढ़ तथा धर्मेस की कथा, गोंडी में लिंगोपाटा, घोटुलपाटा, सिरी सोमनीराजा पाटा, भीमुलपाटा तथा करनपाटा, भतरी में भुमकालगीत तथा हलबी में धनकुलगीत आदि ऐसे गाथा–महाकाव्य हैं जिनसे आज लोग परिचित नहीं हैं।

छत्तीसगढ़ कलाओं का घर है। इस प्रदेश में संगीत, नृत्य, चित्रकला एवं मूर्तिकला के अनन्य साधकों ने जन्म लेकर इन कलाओं को व्यापक रूप से समृद्ध किया है। इसके साथ ही ग्रामीण अंचलों में बसे जनपदीय और जनजातीय लोकमानस ने लोककलाओं, लोकगीतों, लोकनृत्यों और लोकनाट्यों के माध्यम से अपनी कलात्मक अभिरूचियों का निरन्तर परिष्कार किया है। यहाँ गायन की विविध शैलियाँ हैं, इनमें ढोलामारु, गुजरी, गहिरिन, गोपालराय, बिंझिया, सीताराम नाइक, बकावली, रामसिंह का पँवारा, बीरसिंह के कहिनी, राजा गोपी चन्द, रसालू, फूलकुँवर, कँवलारानी, रेवा रानी तथा अहिमन रानी इत्यादि प्रमुख हैं।

यहाँ के लोक–नृत्य भी दर्शनीय हैं। इनमें प्रमुख हैं– सुआ नृत्य, चन्देवी, राउत नृत्य, पंथी नृत्य, करमा नृत्य, सैला नृत्य, परधोनी नृत्य, बिलमा, फाग नृत्य, थापटी नृत्य, ककसाड़ नृत्य, गेंडी नृत्य, गंवर नृत्य, दोरला नृत्य, सरहुल और कोल दहका नृत्य प्रमुख हैं। लोक–कला, लोक–संस्कृति और लोक–साहित्य से समृद्ध इस प्रान्त की विशेषताओं के कारण ही मैंने "कथक नृत्य के विकास में छत्तीसगढ़ राज्य का योगदान" शीर्षक से शोध–कार्य करने का निर्णय लिया है।

छत्तीसगढ़ राज्य में कथक की उत्पत्ति एवं रायगढ़ घराने का योगदान–

अपनी लोकसंस्कृति के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ प्रान्त रायगढ़ के कथक नृत्य के नाम से भी देश–विदेश में अपनी पहचान बनाए हुए है। रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह ने परम्परागत लोक–नृत्यों से अनुप्रेरित होकर रायगढ़ के कथक का आधुनिकता से साज–श्रृंगार किया। कथक नृत्य को कोई लिखित साहित्य न होने की पूर्ति भी उन्होंने अपने ग्रन्थों से की। यह उन्हीं का प्रयास था कि जयपुर, लखनऊ और बनारस घरानों के कथकाचार्यों के लिए रायगढ़ संगम स्थल बन गया था।

विभिन्न कालखण्डों के अनुरूप मनुष्य ने प्रायः सभी विधाओं में परिवर्तन अनुभव किया है, फिर कथक नृत्य इससे अछूता कैसे रह सकता है ? इसका प्रमाण हमें मुगलकाल और आधुनिक काल में दिखाई देता है क्योंकि कथक नृत्य प्रारम्भ से ही प्रयोगधर्मी रहा है और यही वजह है कि गुरुओं और कलाकारों के नवीन दृष्टिकोणों के आधार पर इसमें परिवर्तन होते रहे और आगे भी होते रहेंगे। मुगलकाल में कथक नृत्य मन्दिरों के साथ–साथ राज–प्रासादों में, कभी राजा–महाराजाओं के मनोरंजन का साधन बना तो कभी नर्तकों के मध्य आपसी प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न आनन्द का माध्यम भी बना। यही कारण है कि कथक नृत्य में एक ओर जहाँ ताल–पक्ष निखर कर सामने आया तो वहीं दूसरी ओर श्रृंगारिकता का भी आधिक्य दिखाई देने लगा।

कालान्तर में यही विशेषताएँ कथक नृत्य में तीन घरानों के निर्माण का कारक बनीं और इसी कड़ी में आगे चलकर कथक मर्मज्ञों, गुरुओं, कलाकारों और साहित्यकारों ने छत्तीसगढ़ के रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह के काल में निर्मित बोलों, बन्दिशों और कथक उत्थान के लिए किए गए कार्यों को देखते हुए कथक के चौथे घराने को मान्यता दी और इस तरह वर्तमान में कथक नृत्य के चार घराने प्रतिष्ठित हैं–

1.लखनऊ घराना, 2.जयपुर घराना,
3.बनारस घराना, 4.रायगढ़ घराना

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ नरेश महाराजा चक्रधर सिंह जी की रचनाधर्मिता और कला प्रेम ने एक नए घराने का सूत्रपात किया। राजा साहब ने गायन, वादन और कथक नृत्य के लिए अनेक उत्कृष्ट रचनाओं का निर्माण कर उसे विभिन्न प्रतिष्ठित ग्रन्थों का रूप दिया, जो वर्तमान समय के साथ कथक नृत्य गुरुओं, कलाकारों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

छत्तीसगढ़ राज्य में कथक नृत्य के क्षेत्र में संस्थागत शिक्षण प्रणाली का योगदान–

परिवर्तनशील राह पर चलते–चलते विभिन्न भारतीय शास्त्रीय कलाएँ संस्थागत शिक्षण प्रणाली के आविर्भाव का कारक बनीं और गुरु–शिष्य परम्परा के साथ–साथ विभिन्न कलाएँ शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में पढ़ाई और सिखाई जाने लगीं। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ राज–परिवार की पहल और सहयोग से एशिया के सबसे पहले विश्वविद्यालय–इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जहाँ छत्तीसगढ़ राज्य के विद्यार्थियों के साथ–साथ देश–विदेश के विद्यार्थियों और गुरुओं ने अपनी कला–यात्रा की शुरुआत की। भारतीय शास्त्रीय कलाओं और लोक–कलाओं को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ के अधिकांश शहरों

में भी संगीत महाविद्यालय की स्थापना की गई, जिनमें रायपुर, कवर्धा, राजनांदगाँव, धमतरी, जगदलपुर, बिलासपुर और दुर्ग आदि शहर प्रमुख हैं।

छत्तीसगढ़ शासन का संस्कृति एवं पर्यटन विभाग शास्त्रीय और लोक–कलाओं के प्रचार–प्रसार और कलाकारों के उन्नयन हेतु समय–समय पर वार्षिक मेलों, महोत्सवों, कार्यशालाओं और समारोह का भी आयोजन करता आ रहा है ताकि इन समृद्ध कलाकारों से आम जनता भी परिचित हो सके और ये कलाएँ हमारे संस्कार में आएं।

सन्दर्भ

1. मिश्र आचार्य रमेन्द्र नाथ, *छत्तीसगढ़ के दुर्लभ ऐतिहासिक स्त्रोत,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करणः 2017.

2. गुप्त प्यारेलाल, *प्राचीन छत्तीसगढ़,* रविशंकर विश्व विद्यालय, रायपुर (म.प्र.), प्रथम संस्करणः 1973.

3. पाण्डेय डॉ. श्याम कुमार, दक्षिण कोसलः *छत्तीसगढ़ का इतिहास तथा वास्तुशिल्प,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म.प्र.), प्रथम संस्करणः 2002.

4. शुक्ल डॉ. हीरालाल, *समग्र छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करणः 2017.

5. मिश्र डॉ. प्रभुलाल, *भारतीय रियासतें ब्रिटिश नीति एवं संबंध,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करणः 2018.

6. वर्मा डॉ. भगवान सिंह, *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल (म.प्र.), संस्करणः प्रथम 1991, द्वितीय 1992, तृतीय संशोधित 1995.

7. अग्रवाल किशोर कुमार, *बीसवीं शताब्दी का छत्तीसगढ़,* वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.), प्रथम संस्करणः 2006.

8. Tripathi Dr. K.K., Vishwakarma Dr. R.N., Jha Dr. Mangalanand, *KALA VAIBHAVA*, Volume- XIII-XIV (2003-2004), Dept. of Hitory of Indian Art and Culture Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya Khairagarh And Directorate of Culture, Archaeology and Museum, Govt of C. G. Raipur (C.G.), Year 2004.

9.यदु डॉ. मन्नू लाल, *छत्तीसगढ़ की संस्कृति–गंगा, छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान,* रायपुर (छ.ग.), प्रकाशन वर्षः 2002.

10. Shabari State Handicrafat Emporium, Chhattisgarh Handicraft Development Board, Chhattisgarh Haat Premises, Raipur (C.G.).

11. *BASTAR DHOKRA*, Chattisgarh Hastshilp Vikas Board.

12. *Travelplus Crafts of Chhattisgarh*, India Today Travelplus, living media India Ltd., New Delhi, Year - 2009.

13. मोहम्मद प्रो. शरीफ, *भारत के लोकनृत्य,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म.प्र.), संस्करणः द्वितीय (आवृत्ति) 2010.

14. Narayana Shovana, *Folk Dances of India*, Shubhi Publications, Gurgaon, India, First Edition - 2013.

15.विश्वकर्मा डॉ. आर.एन, *छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक विरासत,* Dept. of Ancient Indian History, Culture & Achaeology Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya, Khairagarh (C.G.), Year 2012.

16. गहरवार नीता, *भारतीय संस्कृति में नृत्य,* बी.आर. रिदम्स, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2015.

17. सिंह श्रीमती मालती, *छत्तीसगढ़ी लोक संगीत मंडलियों का इतिहास,* इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ मध्यप्रदेश में पी. एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, वर्ष – 1995.

18. चन्द्राकर शैलजा, *छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्व,* इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ मध्यप्रदेश में पी. एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, वर्ष – 1991.

19. तिवारी पं. रामकृष्ण, *छत्तीसगढ़ का लोक संगीत,* मातृकला प्रकाशन, खैरागढ़, प्रथम संस्करणः 2007.

20. आठले डॉ. उषा वैरागकर, *छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और रंगकर्म,* श्री प्रकाशन दुर्ग (छ.ग).

21. सिंह राजेश, *छत्तीसगढ़ की रूपंकर लोक कलाएँ,* इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ मध्यप्रदेश में पी. एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, वर्षः 1999.